भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 3759
बुधवार, 18 दिसंबर, 2024 को उत्तर दिए जाने के लिए

समुद्र तट खंडों का पुनरुद्धार

3759. श्री संजय हरिभाऊ जाधव:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या प्राकृतिक करणों और मानवीय गतिविधियों के कारण देश की समुद्री तटरेखा का व्यापक क्षरण हुआ है;
(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ग) क्या प्राकृतिक कारणों और मानवीय गतिविधियों के कारण क्षरणीय समुद्री तटरेखा के खंडों को चिन्हित करने के लिए सरकार का वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करते हुए कोई सर्वेक्षण और मापन करने विचार है;
(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ङ) क्या सरकार ने तटरेखा के ऐसे खंडों के पुनरुद्धार के लिए उनको चिन्हित किया है; और
(च) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और उक्त तटरेखा के पुनरुद्धार हेतु क्या कार्य योजना है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) जी हां।

(ख) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के संबद्ध कार्यालय राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केन्द्र (NCCR) ने उपग्रह एवं फील्ड सर्वेक्षित डेटा का प्रयोग करते हुए भारतीय तट के तटरेखा परिवर्तनों का अध्ययन किया है, तथा 6907.18 किमी लंबी तटरेखा का मानचित्रण किया है, जो कि समस्त भारतीय मुख्यभूमि तट को कवर करती है। अध्ययन में तटरेखा में परिवर्तनों से संबंधित एक दर्जन से अधिक कारण वर्णित किए गए हैं, तथा उन्हें प्राकृतिक और मानवजनित कारणों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह पहचाना गया है कि, तूफानी लहरों के कारण समुद्र स्तर में वृद्धि होना एक प्राकृतिक कारण है, तथा तटों पर बंदरगाहों, समुद्र तट खनन और नदियों पर बांधों के निर्माण जैसी संरचनाओं का निर्माण किया जाना तटरेखा परिवर्तनों के पीछे मुख्य मानवजनित कारण हैं।

(ग) एवं (घ) वैज्ञानिक कार्यपद्धति के आधार पर, राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र (NCCR) ने तटीय कटाव का आकलन किया है, तथा रिमोट सेंसिंग और फील्ड सर्वेक्षण डेटा का उपयोग करके 1990-2018 की समयावधि के दौरान समुद्री कटाव वाले तटीय क्षेत्रों की पहचान की है। अध्ययन में पाया गया कि भारतीय तटरेखा का 34% हिस्सा क्षरण के प्रति संवेदनशील है।

इसके अतिरिक्त, तटरेखा मानचित्रण प्रणाली के हिस्से के रूप में, समग्र भारतीय मुख्यभूमि तट के लिए 526 मानचित्र तैयार किए गए हैं, इन्हें तटीय क्षरण के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान करने के लिए तैयार किया गया है, इसमें 1:25000 पैमाने पर 69 जिला मानचित्र, 9 राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के मानचित्र शामिल हैं। "भारतीय तट पर तटरेखा परिवर्तन का राष्ट्रीय मूल्यांकन" पर एक रिपोर्ट जुलाई 2018 में जारी की गई थी, तथा तटरेखा संरक्षण उपायों का कार्यान्वयन करवाने के लिए यह रिपोर्ट केंद्र एवं राज्य सरकार के विभिन्न अधिकरणों तथा हितधारकों के साथ साझा की गई थी। रिपोर्ट के डिजिटल संस्करण के साथ समस्त मानचित्रों युक्त एटलस का अपग्रेडेड संस्करण दिनांक 25 मार्च 2022 को जारी किया गया था।

(ङ) एवं (च) जी हां। राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र (NCCR) ने पुदुच्चेरी और केरल के चेल्लनम तट पर तटीय कटाव शमन के नवप्रवर्तनशील उपायों का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया था, जिससे पुदुच्चेरी में लुप्त समुद्र तट के तटीय क्षेत्रों की पुनर्स्थापना और संरक्षण, तथा चेल्लनम नामक मत्स्यपालन करने वाले गांव को बाढ़ से बचाने में मदद मिली। राष्ट्रीय तटीय अनुसंधान केंद्र (NCCR) आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, पुदुच्चेरी और केरल सरकारों को समुद्र तट की निगरानी, संवेदनशील हिस्सों में तटीय सुरक्षा उपायों की डिजाइन और तटरेखा प्रबंधन योजना की तैयारी करने संबंधी तकनीकी सहायता भी प्रदान कर रहा है। तटीय/समुद्रतट पुनर्स्थापना उपायों का कार्यान्वयन तत्संबंधी समुद्री सीमा वाले राज्यों और संघ शासित प्रदेशों द्वारा अपनी प्राथमिकता के अनुसार किया जाता है।

*****